टिप्पणी

32

संयुक्त राष्ट्र और आर्थिक तथा सामाजिक विकास

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) और इसकी विशिष्ट एजेंसियां आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि सभी देशों का आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किए बिना स्थायी शांति के लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता। इसलिए संयुक्त राष्ट्र के अधिक से अधिक संसाधनों का उपयोग आर्थिक और सामाजिक विकास से संबंधित क्रियाकलापों के लिए होता है। वर्ष 1960 से संयुक्त राष्ट्र नव स्वतंत्र और गरीब देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए कार्य कर रहा है। इस क्षेत्र में क्रियाकलापों का मुख्य लक्ष्य आवास और बीमारी जैसी समस्याओं का हल निकालना है। इन समस्याओं की आर्थिक और सामाजिक दोनों ही विशेषताएं और प्रभाव हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- विकासशील देशों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा की गई प्रमुख पहल को समझने में सक्षम होंगे;
- विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न इकाइयों, अभिकरण इकाइयों तथा अभिकरण समूहों को जान सकेंगे;
- विभिन्न सामाजिक और आर्थिक विकास अभिकरणों के क्रियाकलापों को याद रखने में सक्षम होंगे; तथा
- बाधाओं के बावजूद विकासशील देशों की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने में संयुक्त राष्ट्र की अहम भूमिका से आप अवगत होंगें।

32.1 सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख पहल

अर्थव्यवस्था के आकार और मजबूती के आधार पर सामान्यत: देशों को विकसित या विकासशील देशों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। पूरे यूरोप और उत्तरी अमेरिका में विकसित देश विषुवत् रेखा के उत्तर अवस्थित हैं। ये देश (जैसे अमेरिका, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि) की प्रति व्यक्ति आय ऊंची है। इनका औद्योगिक व शैक्षिक स्तर भी ऊंचा है तथा स्वास्थ्य, विज्ञान व अन्य क्षेत्रों में ये काफी आगे हैं। ये देश विश्व अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व रखते हैं। विश्व की कुल आबादी का दो तिहाई हिस्सा विकाशील देशों में है जो व्यापक गरीबी, निरक्षरता, भूख और बीमारियों से ग्रस्त हैं। इनकी व्यक्तिगत आय स्तर बेहद कम है। इन देशों ने सदियों तक औपनिवेशिक शासन झेला है। औपनिवेशिक शासकों ने इन देशों के लोगों की आर्थिक और औद्योगिक प्रगति में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। उन्होंने अपने आर्थिक फायदे के लिए विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया है।

1960 से कई सारे उपनिवेश स्वतंत्र देश के रूप में उभर कर सामने आने लगे और संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता ग्रहण की। संयुक्त राष्ट्र में अपने बढ़ रहे बहुमत की मदद से वे अभिकरण निर्मित करने में सक्षम थे। संयुक्त राष्ट्र ने पहला विकास दशक की शुरुआत की। 1960 के दशक में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन, अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं अस्तित्व में आई।

विकासशील देशों की पहल पर संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (अंकटाड) का गठन विकासशील देशों के फायदे और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए 1964 में किया गया। इसने कई तरीकों से विकासशील देशों की मदद की।

अंकटाड ने क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय स्तरों पर परसपर व्यापारिक और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए विकासशील देशों द्वारा उठाए गए कदमों को अच्छा-खासा समर्थन प्रदान किया। इसने तकनीकी सहायता को भी प्रोत्साहित किया।

अंकटाड में विकासशील देशों का एक समूह गठित किया गया। इस समूह में अब 132 देश हैं। इसने विकसित देशों के साथ आर्थिक और व्यापारिक समस्याओं पर वार्ता प्रक्रिया में विकासशील देशों के बीच एकता और अखण्डता का प्रतिनिधित्व किया है। उदाहरण के लिए इसमें प्राथमिक उपभोक्ता वस्तुओं, जैसे विकसित देशों के बाजारों को निर्यात किए जाने वाले कपास और कॉफी की स्थायी कीमतों के लिए विकासशील देशों की मांग पर जोरदार समर्थन किया।

अंकटाड ने विकसित देशों में विकासशील देशों द्वारा शोध विकास संबंधी क्रियाकलापों के लिए निम्न आय वाले देशों को अधिकाधिक विकास सहायता और ऋण राहत आदि देने के लिए अधिमान्य या विशेष व्यापार या शुल्क कटौती सुनिश्चित करने की कोशिश की।

अंकटाड और संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक कदम आगे बढ़कर गैर न्यायोचित अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था पर सवाल खड़े किए। विकासशील देशों के आरक्षित हितों की सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 1974 में एक नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (एनआईईओ) की स्थापना का आह्वान किया और धनी तथा गरीब सभी देशों के लिए एकता और न्याय के आदर्शों को सामने रखा।

एनआईईओ का गठन कुछ सिद्धांतों जैसे समानता के आधार पर विश्व आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए सभी देशों की भागीदारी, अपने विकास के लिए सबसे उपयुक्त आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था अपनाने संबंधी प्रत्येक देश के अधिकार, अपने प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्येक देश की पूरी स्थायी संप्रभुता, विकासशील देशों में काम कर रही बहुराष्ट्रीय कंपनियों (एमएनसी) का नियमन और निरीक्षण, विकासशील

देशों द्वारा निर्यातित कच्चे माल सामग्रियों और प्राथमिक उपभोक्ता वस्तुओं तथा सामानों की उचित कीमत, विकासशील देशों को तकनीकी और वित्तीय सहायता तथा विकासशील देशों के लिए अधिमान्य और गैर-अधिमान्य व्यवहार आदि पर हुआ था।

विकसित देशों के सहयोग के अभाव में एनआईईओ द्वारा उनके सामने रखी गई महत्वपूर्ण रियायतों के लिए वे तैयार नहीं थे। धनी देशों ने समूह 77 के भीतर विभिन्न आर्थिक हितों का फायदा उठाया और तेल आयात करने वाले देशों को तेल के मामले में संपन्न देशों के विरुद्ध लाकर खड़ा कर दिया। इसके अलावा मध्य आय जैसे भारत और ब्राजील देशों के विरुद्ध सबसे कम विकसित देशों को खड़ा करने का काम किया। 1970 के दशक के अंत तक कई विकासशील देश गंभीर भुगतान संतुलन की समस्या का सामना कर रहे थे और वे ऋण के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक की मदद लेने के लिए बाध्य थे। इन संस्थानों का नियंत्रण धनी देशों द्वारा किया जाता है। इस स्थिति ने विकासशील दुनिया में आर्थिक और व्यापार संबंधी नीतियों पर धनी देशों को अपना गंभीर प्रभाव डालने का अवसर प्रदान किया।

आर्थिक संकट की वज़ह से दूसरे विकास दशक के लक्ष्य पहले दशक की तुलना में काफी कम हासिल किए जा सके। संयुक्त राष्ट्र ने आर्थिक और सामाजिक विकास से जुड़ी चिंताओं और जरूरतों को संबोधित करने के लिए रणनीतियों पर बातचीत के लिए कई सारे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया और कार्य योजनाएं स्वीकार की गईं। विकास से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण सम्मेलनों में शामिल हैं; पर्यावरण और विकास सम्मेलन जिसे पर्यावरण और विकास पर विश्व सम्मेलन (1992) के नाम से भी जाना जाता है, मानव अधिकार पर सम्मेलन (1993), जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1994), विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन (1995), विश्व महिला सम्मेलन (1995) और मानव आवास पर संयुक्त राष्ट्र सिटी सम्मेलन (1997)।

इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने तीसरी दुनिया के आर्थिक और सामाजिक विकास संबंधी हितों को बढ़ावा देने में भी अपनी भूमिका निभाई। 1994 में महासचिव बुतरस बुतरस घाली के विकास के एजेंडे में एक दूरगामी दृष्टिकोण है।

वर्ष 2000 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (एमडीजी) तय किए गए। इन लक्ष्यों में अत्यधिक गरीबी को खत्म करना, सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को हासिल करना, मातृ स्वास्थ्य में सुधार लाना और बाल मृत्यु दर में कमी लाना जैसे लक्ष्य शामिल हैं। विकास संबंधी लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों देशों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया और गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को 2015 तक हल करने का आह्वान किया गया है।

पाठगत प्रश्न 32.1

रिक्त स्थान भरिए :

(क) संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहला विकास दशक शुरू किया गया था वर्ष ..... में।

(ख) पहला अंकटाड (यूएनसीटीएडी) का आयोजन वर्ष ..... में हुआ था।

(ग) संयुक्त राष्ट्र के संसाधनों के अधिकांश हिस्से का उपयोग आर्थिक और सामाजिक विकास संबंधी क्रियाकलापों के लिए होता है। (सही/गलत)

(घ) समूह 77 धनी व विकसित देशों का एक समूह है। (सही/गलत)

32.2 संयुक्त राष्ट्र विकास अभिकरणों का समूह

अपने आर्थिक और सामाजिक कार्यक्रमों के योजना निर्माण, समन्वय, प्रशासन और क्रियान्वयन के लिए संयुक्त राष्ट्र की संरचना विशाल और विकेंद्रीकृत है।

संरचना में सबसे ऊपर संयुक्त राष्ट्र महासभा और आर्थिक तथा सामाजिक परिषद (ईसीओएसओसी) हैं। महासभा आर्थिक और सामाजिक क्रियाकलापों के लिए सामान्य दिशा और निगरानी का कार्य करती है। ईसीओएसओसी सिर्फ इसी काम पर अपने आप को केंद्रित करता है और क्रियान्वयन आयोगों की सहायता से इन कार्यों को अंजाम देता है। ये सांख्यिकीय आयोग, मानवाधिकार आयोग, महिलाओं की स्थिति से संबंधित आयोग, सामाजिक विकास आयोग, नारकोटिक ड्रग आयोग है।

कुछ क्षेत्रीय आर्थिक आयोग भी हैं जो अपने भौगोलिक क्षेत्रों से संबंधित प्रमुख समस्याओं पर बल देते हैं। ऐसे पांच आयोग गठित किए गए हैं: यूरोपीय आर्थिक आयोग (ईसीई), एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (ईएससीएपी), दक्षिण अमेरिका के लिए आर्थिक आयोग, अफ्रीका के लिए आर्थिक आयोग (ईसीए) और पश्चिमी एशिया के लिए आर्थिक आयोग।

आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में कई अन्य संस्थाएं भी अस्तित्व में हैं जो ईसीओएसओसी के दिशा-निर्देश या नियंत्रण से प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित नहीं है, लेकिन वे ईसीओएसओसी के क्रियाकलापों से करीबी तौर से जुड़ी हैं। इन एजेंसियों में शामिल हैं: 1. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), 2. संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल कोष (यूएनआईसीईएफ या यूनिसेफ) 3. शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (यूएनसीआर) 4. संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (यूएनसीटीएडी या अंकटाड), 5. संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूएनआईडीओ), 6. विश्व खाद्य कार्यक्रम, 7. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी)। ये संयुक्त राष्ट्र के विशिष्ट अभिकरण हैं। यद्यपि ये अभिकरण संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था के हिस्से हैं लेकिन ये संयुक्त राष्ट्र से जुड़े संगठनों से स्वतंत्र होकर काम करते हैं और सामान्य तौर पर उन्हें स्वायत्वशासी संगठन कहा जाता है। इनमें से प्रत्येक का अपना मुख्यालय, संविधान, कर्मचारी और बजट है। प्रत्येक का गठन एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के तहत संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक ही तरीके से किया गया है। इन विशिष्ट अभिकरणों की सदस्यता और संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता समान नहीं है। इन एजेंसियों की सदस्यता सार्वभौमक है। जो देश संयुक्त राष्ट्र के सदस्य नहीं है वे भी इन विशिष्ट अभिकरणों के सदस्य हो सकते हैं।

प्रत्येक विशिष्ट अभिकरण एक अंतर-सरकारी एजेंसी है और इसका गठन अंतर्राष्ट्रीय संधि या एजेंसी तथा संयुक्त राष्ट्र के बीच समझौते के तहत किया जाता है। इस समझौते पर एजेंसी और ईसीओएसओसी के बीच वार्ता होती है और इस पर महासभा की स्वीकृति जरूरी है।

लगभग 15 विशिष्ट अभिकरण हैं जो संयुक्त राष्ट्र के साथ संपर्क बनाकर काम करते हैं। हम संयुक्त राष्ट्र विकास अभिकरणों जैसे यूएनडीपी, यूएनआईसीईएफ, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूएनईएससीओ) और विश्व बैंक के क्रियाकलापों की पहचान और उसकी व्याख्या करेंगे।

32.3 विकास सहायता कार्यक्रम

1965 में स्थापित यूएनडीपी संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था का एक प्रमुख विकास अभिकरण है। विकासशील देश यूएनडीपी के साथ काम करने में अधिक सुविधा महसूस करते है। यद्यपि यूएनडीपी कोई वित्तीय सहायता प्रदान नहीं कर सकती है, लेकिन यह प्रशिक्षण कार्यक्रमों और विकासशील देशों को तकनीकी विशेषज्ञ

उपलब्ध कराने जैसे कार्यों के जरिये मदद करती है। कुछ मिलाकर इसने विभिन्न परियोजनाओं के लिए 40 अरब डॉलर से अधिक खर्च किया है।

हाल में शुरू की गई कुछ परियोजनाएं इस प्रकार हैं:

- लिंग समानता को बढ़ावा देना यूएनडीपी कंट्री प्रोग्राम का एक प्रमुख कार्य क्षेत्र है। भारत में यूएनडीपी खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम में निरंतर मानव विकास के लिए कृषि कार्य में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और महिलाओं के सशक्तीकरण पर बल दिया गया।
- यूएनडीपी ने फिलीस्तीनी क्षेत्र को आपात कालीन सहायता के रूप में 1.5 लाख डॉलर आबंटित किए।
- मई 2001 में यूएनडीपी ने सबसे कम विकसित देशों में सार्वजनिक क्षेत्र में सुधार लाने, संसदीय व्यवस्था में सुधार लाने, संघर्ष रोकने और शांति व्यवस्था बनाने जैसे क्षेत्रों में कार्यक्रम शुरू करने के लिए एक नए यूएनडीपी लोकतांत्रिक शासन ट्रस्ट कोष की स्थापना की घोषणा की।
- भारत सरकार के सहयोग से यूएनडीपी ने नवीकृत की जाने वाली ऊर्जा के उत्पादक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए गुजरात राज्य (आपदा प्रभावित क्षेत्र) के कच्छ जिले में जुलाई 2004 में 4वर्षीय परियोजना शुरू की।
- यूएनडीपी ने भारत में सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में वित्तीय पहल से संबंधित परियोजना को समर्थन दिया, क्योंकि अधिकांश ग्रामीण और शहरी झुग्गी-झोंपडी में रहने वाली आबादी स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे होने के बावजूद स्वास्थ्य और चिकित्सा व्यवस्था के दायरे से बाहर हैं।
- यूएनडीपी ने 23 जनवरी, 2004 को विकासशील देशों के सामूहिक शिक्षण केन्द्रों में तकनीकी प्रशिक्षण की नई शुरुआत की।

32.4 संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल कोष (यूएनआईसीईएफ या यूनिसेफ)

1946 में स्थापित यूनिसेफ पूरी तरह से वंचित बच्चों की स्थिति सुधारने से संबंधित कार्यों पर ध्यान देता है।

यूनिसेफ ने बाल कल्याण को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, मलेरिया उन्मूलन, पोषण, ग्रामीण, विकास, परिवार और बाल कल्याण तथा आपातकालीन सहायता से संबंधित परियोजनाएं संचालित की हैं। इसके द्वारा संचालित किए गए सामाजिक और मानवीय कार्यों के लिए यूनिसेफ को 1965 में नोबल शांति पुरस्कार दिया गया था। यह बड़े स्तर पर भारत पर ध्यान देता है। यूनिसेफ ने भारत में बच्चों के लिए एक बेहतर परिवेश निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसने भू-जल संसाधनों में अत्यधिक फ्लोराइड की समस्या की पहचान की। राजस्थान और आंध्र प्रदेश इससे सबसे अधिक प्रभावित राज्य हैं।

डब्ल्यूएचओ के लक्ष्य हैं: (1) बीमारी के प्रसार को रोकना (2) बीमारी की रोकथाम और 3. बीमारी के प्रकोप को रोकना। बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए उठाए गए तरीको में लोकस्वास्थ्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक उपलब्ध कराने से संबंद्धा बैठकें शामिल हैं। डब्ल्यूएचओ वैज्ञानिक जानकारी का एक क्लीयरिंग हाऊस और बीमारी से निजात के लिए जानकारियों का प्रसार करने वाला एक्सचेंज रहा है। बीमारी के प्रकोप को रोकने के क्षेत्र में डब्ल्यूएचओ के काम शोध के नतीजों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने में सहयोग देना और शोध को बढ़ावा देने में मदद करना है। इसने रोकथाम के सस्ते उपायों के साथ शोध

को बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से ट्यूबरक्यूलोसिस के लिए टीके और मलेरिया के लिए डीडीटी को इसने प्रोत्साहित किया है। मलेरिया के विरुद्ध अभियान डब्ल्यूएचओ के सबसे बड़े कार्यक्रमों में से एक रहा है। चूंकि एड्स पैदा करने वाला ह्यूमन इम्यून डिफिसिएंसी वायरस (एचआइवी) का दुनिया के अधिकांश देशों में आतंक बढ़ता जा रहा है, इसलिए डब्ल्यूएचओ एड्स के इलाज के लिए टीके बनाने के लिए शोध में जुड़ा हुआ है। इस खतरनाक बीमारी की चुनौती का सामना करने के लिए इसे संपन्न सदस्य देशों में वित्तीय सहायता की जरूरत है।

पोलियो उन्मूलन टीकाकरण डब्ल्यूएचओ का बेहद महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। 21वीं सदी में खत्म होने वाली पोलियो पहली बीमारी है। संयुक्त राष्ट्र स्वास्थ्य एजेंसी डब्ल्यूएचओ का एक महत्वपूर्ण अभियान तम्बाकू उपयोग का विरोध है जो विशेष रूप से विकासशील देशों में तम्बाकू उपयोग के विरुद्ध है।

खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ग्रामीण विकास पर ध्यान देता है। रोम स्थित यह अभिकरण कृषि के विकास को बढ़ावा देकर, पोषण में सुधार करके और भोजन तक लोगों की आसान पहुंच संभव करके गरीबी और भूख की समस्या को खत्म करने के लिए काम करती है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) औद्योगिक कामगारों के रहने और काम के मानकों व स्तरों में इजाफा करने में विभिन्न देशों की मदद करता है। संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन, वैश्वीकरण के युग में विकासशील देशों के औद्योगिक विकास के लिए प्रयास करता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के साथ यह बात सामने आई कि युद्ध लोगों के मस्तिष्क में पैदा होता है और अज्ञानता, संदेह और घृणा इसे बढ़ावा देता है। इन चीजों से युद्ध की शुरुआत होती है। यह महसूस किया गया कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से लोगों के बीच जानकारी और बेहतर समझ आ सकती है।

32.5 विश्व बैंक समूह

पिछले खण्ड में संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अभिकरणों के कार्यक्रमों में से कुछ की चर्चा हुई। ये एजेंसियां विकास के उद्देश्य के लिए पर्याप्त वित्तीय योगदान देती हैं। उदाहरण के लिए यूएनडीपी का लगभग 670 मिलियन डॉलर का वार्षिक बजट पूरी तरह से विकास प्रक्रिया को सहायता देने के लिए समर्पित है। विकास के लिए पूंजी प्राथमिक कारक है।

संयुक्त राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय एजेंसियां अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (आईआरबीडी) या विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) हैं। इन्हें ब्रेटन वुड्स संस्थान भी कहा जाता है, क्योंकि ये एजेंसियां अमेरिका के न्यू हेम्पशायर में दिसम्बर 1945 में आयोजित ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अस्तित्व में आई थी। आईएमएफ भुगतान संतुलन की समस्या सुलझाने के लिए सरकारों को अस्थायी वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है।

विश्व बैंक समूह बुनियादी संरचना के विकास संबंधी परियोजनाओं के लिए कोष उपलब्ध कराने वाला सबसे बड़ा बहुपक्षीय स्रोत है। अभी तक लगभग 300 बिलियन डॉलर की सहायता दी जा चुकी है।

विश्व बैंक और आईएमएफ की कड़ी आलोचना भी की जाती है। इन संस्थानों पर धनी देशों का प्रभाव है। ये संयुक्त राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार भी नहीं हैं। इनकी संरचना लोकतांत्रिक नहीं है। इन संस्थानों में मतदान महासभा की तरह एक देश एक मत के सिद्धांत पर आधारित नहीं है। इन संस्थानों में वित्तीय योगदान के आधार पर किसी सदस्य के पास कई सारे मत हो सकते है। अत: सदस्यों के मतों की संख्या उनके द्वारा दिए जाने वाले वित्तीय योगदान पर निर्भर करती है।

विश्व बैंक का ऋण दो श्रेणियों में विभाजित है। निवेश संबंधी ऋण दीर्घकालिक ऋण है, जिसका उद्देश्य गरीबी कम करना और निरंतर विकास के लिए आवश्यक भौगोलिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। विश्व बैंक का ऋण प्राथमिक स्कूलों के निर्माण में विकाशील देशों की मदद करता है। अन्य परियोजनाओं में गरीबी निवारण, ग्रामीण विकास, जल और सफाई, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और स्वास्थ्य आदि सम्मिलित हैं। विश्व बैंक के सभी ऋण में निवेश ऋण की हिस्सेदारी 75 से 80 फीसदी है। समायोजन ऋण विश्व बैंक के ऋण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह बाजार संरचनाओं तथा राजनीतिक व्यवस्थागत सुधार को बढ़ावा देने के लिए कम अवधि का ऋण है। पिछले 20 सालों के दौरान समायोजन ऋण का प्रतिशत विश्व बैंक के सभी ऋणों में 20–25 प्रतिशत के बीच रहा है।

विकास के लिए बहुपक्षीय वित्त पोषण के अन्य महत्वपूर्ण स्रोतों में क्षेत्रीय बैंक जैसे अंतर अमेरिकी विकास बैंक और एशियाई विकास बैंक आदि शामिल हैं। अपने क्षेत्र में सैकड़ों परियोजनाओं को वित्त उपलब्ध कराने के ये प्रमुख स्रोत रहे है।

पाठगत प्रश्न 32.2

रिक्त स्थान भरिए :

(क) आर्थिक और सामाजिक क्रियाकलापों के लिए पहल करने वाले संयुक्त राष्ट्र के मुख्य अंग .... और ..... हैं।

(ख) एफएओ का मुख्यालय ..... में हैं।

(ग) यूएन व्यवस्था में क्षेत्रीय आर्थिक आयोग ..... के हिस्से हैं।

(घ) अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक का संक्षिप्त नाम ..... है।

(ड.) **निम्नलिखित को सही या गलत के रूप में चिह्नित करें:**

(i) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) विकास परियोजनाओं और कार्यक्रमों के लिए वित्त उपलब्ध कराने वाली प्रमुख एजेंसी है। (सही/गलत)

(ii) आइ.एम.एफ. का पूरा नाम भारतीय मुद्रा कोष है। (सही/गलत)

(iii) विश्व बैंक भुगतान संतुलन को सही करने में विकासशील देशों की मदद करता है। (सही/गलत)

आपने क्या सीखा

संयुक्त राष्ट्र ने न सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए बल्कि विकासशील देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। महासभा, आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्रियाकलापों और कार्यक्रमों का समन्वय करती है। संयुक्त राष्ट्र विकास संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए बहुपक्षीय सहायता उपलब्ध कराने का मुख्य स्रोत है। विभिन्न संयुक्त राष्ट्र विकास अभिकरणों जैसे यूएनडीपी, यूनीसेफ, डब्ल्यूएचओ, विश्व बैंक आदि विकास कार्यक्रमों और परियोजनाओं के लिए कोष उगाहने, कोष उपलब्ध कराने और सहायता करने का काम करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. आर्थिक और सामाजिक विकास संबंधी क्रियाकलापों के लिए संयुक्त राष्ट्र की संरचना बताएं।
2. आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख पहल क्या है?
3. विकास के लिए मुख्य वित्तीय एजेंसी के रूप में विश्व बैंक के क्रियाकलापों की विवेचना कीजिए।
4. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के कार्यों की व्याख्या कीजिए।
5. बच्चों के कल्याण को बढ़ावा देने में यूनीसेफ की भूमिका का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

32.1

(क) 1960

(ख) 1964

(ग) सही

(घ) गलत

32.2

(क) महासभा और आर्थिक और सामाजिक परिषद।

(ख) रोम

(ग) आर्थिक और सामाजिक परिषद

(घ) विश्व बैंक

(ड.) (i) गलत

(ii) गलत

(iii) गलत

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खंड 32.1 देखें
2. खंड 32.2 देखें
3. खंड 32.5 देखें
4. खंड 32.3 देखें